एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 01 (जनवरी, 2025)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

खरबुजा की उत्पादन तकनीक

(*मामराज गुर्जर, सुनील कुमार मीना एवं अशोक कुमार)
प्रसार शिक्षा विभाग, श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, जयपुर , भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: deependragujjar566@gmail.com

खरबूजे की खेती मुख्य रूप से ग्रीष्मकालीन फसल के रूप में की जाती है। इसकी खेती मुख्य रूप से नदियों के किनारे पर होती है। खरबूजा एक स्वादिष्ट फल है, जो गर्मीयों में तरावट देता है। इसकी मिठास के कारण लोग इसे ज्यादा पसन्द करते हैं। यह पेट विकार में लाभदायक है, इसमें विटामिन सी, ए एवं बी भी पाया जाता है। कच्चे फलों का उपयोग सब्जी बनाने में भी किया जा सकता है।

जलवायु :- खरबूजा ग्रीष्म ऋतु की फसल है, गर्म एवं शुष्क जलवायु वाले प्रदेश इसकी खेती के लिये उपयुक्त है। बीजों के अंकुरण एवं पौधों की बढवार के लिये 22 से 26 डिग्री सेल्सियस तापमान अनुकूल रहता है। फल पकते समय मौसम शुष्क तथा पछुआ हवा चलने से फलों में मिठास बढ़ जाती है। अच्छा उत्पादन लेने हेतु जलवायु फसल के अनुकूल होनी चाहिए।

भूमि एवं उसकी तैयारी :- खरबूजे की अच्छी वृद्धि एवं उपज के लिये जीवांशयुक्त बलुई दोमट, दोमट मिट्टी उपयुक्त मानी जाती है। खेत की मिट्टी का पी.एच. मान 6 से 7 के बीच उपयुक्त रहता है। बुवाई से पहले एक या दो जुताई मिट्टी पलटने वाले हैरो व 2-3 जुताई कल्टीवेटर से करनी चाहिए। अन्तिम जुताई के समय पाटा लगाकर खेत को समतल कर लेना चाहिए और पिछली फसल के अवशेष, कंकड़ तथा पत्थर आदि को खेत से निकाल कर बाहर फेंक दें।

खरबूजे की उन्नतशील प्रजातियां :- अधिक पैदावार लेने हेतु उन्नत प्रजातियों की ही बुवाई करें।

1. काशी मधु :- इस प्रजाति का फल धारीदार एवं पकने पर हल्के पीले रंग के होते हैं। फल काफी मीठे होते हैं, फल का औसत वजन 500-600 ग्राम होता है। औसत उपज लगभग 200 से 250 क्विंटल प्रति हैक्टेयर होती है।

2.पूसा शरबती (एस-445) खरबूजे की अगेती प्रजाती है। इसके फल गोल, मध्यम आकार के तथा छिलका हल्के गुलाबी रंग का होता है। फलों की मिठास मध्यम होती है। इस किस्म की भण्डारण क्षमता होती है।

3. पूसा मधुरस फल गहरे हरे धारीदार एवं पीले हरे होते हैं। गूदा रस से भरा हुआ नारंगी रंग का होता है। औसत उपज 150 से 200 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है।

4. दुर्गापुरा मधु इस प्रजाति का फल मीठा एवं रंग पीला होता है और जूस हेतु उपयुक्त है। फल का औसत वजन 500 से 700 ग्राम तक होता है। औसत उपज 150 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है।

5. हरा मधु :- फल बड़े, मीठे, हरी धारियों तथा पीले रंग के होते हैं। फल का औसत वजन एक किलोग्राम होता है। इसकी औसत उपज 150 क्विंटल प्रति हैक्टेयर हो जाता है।

6. पंजाब संकर इस प्रजाति की बेल मध्यम लम्बाई की फलों का रंग हल्का पीला तथा गूदा नारंगी रंग का होता हैं फल सुगंधित एवं मिठास युक्त होता है। औसत उपज 160 क्विंट प्रति हैक्टेयरहोता है।

बुवाई का समय :- मैदानी क्षेत्रों में खरबूजे की बुवाई फरवरी के बीच में तथा पहाड़ी क्षेत्रों में अप्रैल से मई तक की जाती है। जबकि नदियों के कच्छ पर खरबूजे की बुवाई नवम्बर व दिसम्बर में करते हैं। खरबूजे की नर्सरी तैयार करने हेतु प्रो-ट्रे में बीज की बुवाई दिसम्बर में करते हैं। इस पौध की सीधे खेत में रोपाई कर सकते हैं।

बीज की मात्रा एवं उपचार:- एक हैक्टेयर खरबूजे की बुवाई हेतु संकर बीज 1 से 1.5 किलोग्राम व उन्नत किस्म का बीज 3-4 किलोग्राम की आवश्यकता पड़ती है। बीज को बोने से पहले ट्राइकोडर्मा पाउडर 5 ग्राम प्रति किलोग्राम के हिसाब से उपचारित करके ही बुवाई करें।

खाद तथा उर्वरक :- खरबूजे की फसल का अच्छा उतपादन लेने हेतु सबसे पहले खेत की मिट्टी की जाँच करायें ताकि मालूम हो जाये कि जमीन में कार्बनिक पदार्थ एवं किन-किन पोषक तत्वों की कमी हैं। इसके लिये 200 क्विंटल अच्छी सड़ी गोबर की खाद या 50 क्विंटल वर्मीकम्पोस्ट प्रति हैक्टेयर की दर से अन्तिम जुताई के समय खेत में मिला दें। इसके अलावा रासायनिक उर्वरक जैसे 80 किलोग्राम नाइट्रोजन, 50 किलोग्राम फॉस्फोरस, 50 किलोग्राम पोटाश एवं 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट का प्रयोग करें। नाईट्रोजन की आधी मात्रा, फास्फोरस, पोटाश एवं जिंक सल्फेट की पूरी मात्रा अन्तिम जुलाई के समय खेत में मिला दें। शेष नाइट्रोजन को बुवाई के 40-45 दिन बाद टोप ड्रेसिंग के रूप में फसल में लगायें।

बीज बोने के तरीके :- खरबूजा की बुवाई के लिये मैदानी क्षेत्रों में 2×2 मीटर की दूरी पर 30 से 40 सेमी. चौड़ी नालियां बनाते हैं। बीज की बुवाई नाली के किनारे पर 50 सेमी. की दूरी पर करते हैं। बीज की 2 सेमी. की गहराई पर बुवाई करें। 2×2 मीटर की दूरी पर बेड बनाकर ड्रिप पद्धति के माध्यम से 50 सेमी. की दूरी पर बीज की खेती की बुवाई करके खेती की जा सकती है।

सिंचाई :- गर्मी के मौसम में 5-6 दिनों के अन्तराल पर सिंचाई की आवश्यकता होती है। बेल वाली फसल होने के कारण केवल कूडों में पानी देने से ही काम चल जाता है

खरपतवार नियंत्रण:- फसल की अच्छी पैदावार एवं रंग ता हो की डोता उपज बुवाई की बुवाई करने ध की पौधों की वृद्धि एवं विकास के लिये खरपतवारों का नियंत्रण करना जरूरी है अन्यथा खरपतवारों के कारण फलों की गुणवता व पैदावार दोनों की प्रभावित हो जाएगी। अतः समय-समय पर खेत से खरपतवारों को निकालते रहना चाहिए। सिंचाई के बाद मिट्टी सख्त हो जाती है, तो हल्की निराई-गुड़ाई करें, ताकि मिट्टी की पपड़ी टूट जाए और पौधों की जड़ों की हवा मिल सके। जिससे पौधों का विकास तेजी से होता है. इसके अलावा खरपतवारों को नियंत्रण करने हेतु पेन्डीमैथालिन का प्रयोग कर सकते हैं या व्यूटाक्लोर 50 ई. सी, 2 लीटर सक्रिय तत्त्व प्रति हैक्टेयर की दर से बोने के बाद एवं अंकुरण पूर्व छिड़काव कर मृदा में मिला दें।

खरबूजा फसल में लगने वाले कीट तथा बीमारियां एवं उनका नियंत्रण

कद्दू का लाल कीट: यह कीट तेज चमकीला नारंगी रंग का होता है, इस कीट का भृंग पीलापन लिए सफेद होता है इस कीट के भृग और वयस्क दोनों ही नुकसान पहुंचाते है। पौधों की जड़ो एवं तनो मे छेद कर देते है, इस कीट का आक्रमण फरवरी से अक्टूबर तक होता है।

नियंत्रण: गर्मी मे खेत की गहरी जुताई करें और सेविन पाउडर को 25 किलोग्राम प्रति हैक्टेर की दर राख मे मिलाकर भुरकाव करने से इस कीट का नियंत्रण किया जा सकता है या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 0.5 मिली./लीटर की दर से 10 दिनो के अंतराल पर पर्णीय छिड़काव करें।

फल मक्खी: इस मक्खी का रंग लाल-भूरा होता है. इसके प्रौढ़ मादा छोटे, मुलायम फलो के छिलके के अंदर अण्डा देना पसंद करती है, अंडे से सुडी निकलकर फलो के अंदर का भाग नष्ट कर देते है। ग्रसित फल सड़ जाता है और नीचे गिर जाता है।
नियंत्रण: क्षतिग्रस्त फलो को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए और गर्मियों में गहरी जुताई करें और मैलाथियान 50 इसी. 2 मिली. लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

खरबूजा मे लगने वाले रोग एव नियंत्रण:

चूर्णी फफूंद: इस रोग के लक्षण पत्तियों और तनो की सतह पर सफेद धब्बों के रूप मे दिखाई देते है, कुछ दिनों बाद * धब्बे चूर्ण युक्त हो जाते है, सफेद चूर्णी पदार्थ अंत मे पूरे पौधे की सतह को ढक देता है, इसके कारण फलो का आकर छोटा रह जाता है।
नियंत्रण: बोने के लिए रोग रोधी किस्मों का चयन करें और हेक्साकोनाजल 1.5 मि.ली./लीटर पानी के साथ घोल बनाकर 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिए।
मृदुरोमिल फफूंदी: यह रोग वर्षा एवं गर्मी वाली दोनों फसल को प्रभावित करता है, यह रोग वर्षा ऋतु मे जब तापमान 20-22 सेंटीग्रेड होता है, तेजी से फैलता है, इस रोग के कारण पतियो पर कोणीय धब्बे बनते है, ये कवक पत्ती के ऊपरी भाग पर पीले रंग के होते है तथा नीचे की तरफ रोयेदार फफूंद की वृद्धि होती है।
नियंत्रण: बीज को टाइकोडर्मा पाउडर 4 ग्राम प्रति किलोग्राम से उपचारित करके बुवाई करें। और मेटालैक्सिल मॅकोजेब 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी के साथ घोल बनाकर 10 दिन के अंतराल पर 3-4 छिड़काव करें।

फलों की तुड़ाई :- फलों की तुड़ाई सही अवस्था पर करें। पके फल को निम्नलिखित लक्षण पाये जाते हैं।

1. फल अन्तिम छोर से पकना प्रारम्भ करता है। जिससे फल का रंग बदल जाता है तथा फल पकने पर नर्म हो जाता है।
2. पके फलों से कस्तुरी जैसी सुगन्ध आती है।
3. पुष्प वृन्त के आधार पर रंग हरे से मोम के रंग का होने लगता, है।
4. फल की तुड़ाई दिन की गर्मी बढने से पहले करनी चाहिए और फल को ठण्डे स्थान पर रखना चाहिए।

उपज :- खरबूजे की अच्छी फसल से 200-250 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती है।

संदर्भ

1. agriculture.rajasthan.gov.in › agriculture › -package-of-practices--pop-
2. www.aujodhpur.ac.in › packages-practices